

उ० ५ रिक्त स्थानानि पूरयतु -

- (१) तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ।
- (२) यस्मान् भटतेः किञ्चन कर्म क्रियते ।
- (३) येन यज्ञस्तोयते सुलहोता ।

उ० ६ अचितं मेलयत -

- |     |                 |     |             |
|-----|-----------------|-----|-------------|
| (क) | मनः ज्योतिषाम्  | (ख) | एकं ज्योतिः |
| (ख) | येन कर्मव्यापसौ |     | मनीषिणौ     |
| (ग) | तदु सुलस्य      |     | तथैवेति     |

उ० ६ आमि / न ।

- (क) मनः दूरङ्गमिमे अस्ति । आमि .
- (ख) मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु न ।
- (ग) मनः अपूर्वम् अस्तु । आमि

उ० ६ - एकवचन / बहुवचने परिवर्तयत

उ०

- |        |          |
|--------|----------|
| एकवचन  | बहुवचन   |
| यज्ञः  | यज्ञावु  |
| सुलस्य | सुलानाम् |
| येन    | ये       |
| कर्म   | कर्मणि   |

कल्याणकारी विचारों से युक्त हो ।

→ मन में ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद का सम्पूर्ण ज्ञान समाहित है।

### आभ्यास प्रश्न:-

(1) एक वाक्येन उत्तरं -

(1) मनः जाग्रतः कुत्र उदेति ?

उ० - इरम्

(2)

उज्जानाम् अन्तः स्थितं किम् ?

उ० - मनः

(3) मनसः त्रस्तं किंचन किं न क्रियते ?

उ० - कर्म

प्रश्न - एक वाक्येन उत्तरं -

(क) मे मनः किम् अस्तु ?

उ० - मे मनः शिवस्तद्गुणमस्तु ।

(ख)

मनसा सप्त होता कः क्रियते ?

उ० -

मनसा सप्त होता यसः त्रियते ।

(ग)

मनसि उज्जानां सर्वं किम् औत्तम् ?

उ० - मनसि उज्जानां सर्वं चित्तम् औत्तम् ।



जो जीवों के अन्तःकरण में अमर प्रकाश बुद्धि जिसे बिना कोई भी कार्य नहीं किया जाता है। ऐसा मेरा मन कल्याणकारी कार्यों में लगा रहे।  
(विचारों)

विशेष - इस ~~संकेत~~ में बताया गया है कि मन ही सभी जीवों का प्रकाश है। इसलिए मन की कल्याणकारी होने की कामना की गई है।

(५) ॐ येनेदं भूतं भुवनं - - - - - शिवसङ्कल्पमधु

अर्थ :- जिस अमर मन के द्वारा भूत, वर्तमान और भविष्य काल की समस्त सांसारिक वस्तुओं को ग्रहण किया हुआ माना जाता है जिसके द्वारा सप्तहोतों वाला यज्ञ कार्य सम्पन्न किया जाता है वह मेरा मन कल्याणकारी कार्यों और विचारों से सुकृत हो

विशेष - परसुत मेरा मे मन को कल्याणकारी एवं भूत भविष्य का कर्ता माना गया है।

(६) ॐ यरि-मन्त्रस्थः - - - - - शिवसङ्कल्पमधु

अर्थ :- जिस प्रकार रथ के पहिये के बीच काष्ठ (नाभि) में तिलियों (अक्ष) लगी होती हैं जिससे रथ का चक्र चलता है। उसी प्रकार मन ऊपर रथ के पहिए में यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, अथर्ववेद का सम्पूर्ण ज्ञान 'जाविमों' को स्थित है जिस मन में जाविमों का समग्र ज्ञान भरा है वह मेरा मन सभी प्रकार के



① ॐ यज्जाग्रतो

— शिवसङ्कल्प मन्त्र ।

अर्थ :- जो आत्मा में रहने वाला तथा (मनुष्य को दूर तक ले जाने वाला है) जो इन्द्रियों को धारित करने वाला है, जो जाग्रत अवस्था में दूर-दूर तक भागता है और सुप्त अवस्था में मनुष्य के अन्तःकरण में उसी प्रकार चला जाता है। अर्थात् शान्त हो जाता है। ऐसा वह मेरा मन कल्याणकारी कार्यों में लगा रहें। जो इन्द्रियों का प्रकाश ही विशेष - प्रस्तुत मंत्र यजुर्वेद से लिया गया है इसके मन की चंचलता का वर्णन है।

② ॐ येन

अर्थ - जिस मन के द्वारा कर्मवीर पुरुष मेधावी बुद्धिमान न्यायित अग्निहोत्र आदि महा कार्यों में और स्नान प्रादित की उपयोगिता में समस्त कार्यो को करते हैं जो मन सर्वप्रथम उत्पन्न प्राणिमात्र के हृदय में प्रज्य है वह मेरा मन कल्याणकारी कार्यों में लया विचारों से युक्त हो

विशेष - प्रस्तुत श्लोक में मन को सर्वप्रथम उत्पन्न होने वाला तथा प्राणिमात्र में प्रज्य माना गया है।